आचार्य शिवकोटि (शिवार्य)

जीवन-परिचय : आचार्य शिवकोटि या शिवार्य अपने समय के विशिष्ट विद्वान थे। 'आर्य' शब्द एक विशेषण है। इनका नाम शिवनन्दि, शिवगुप्त या शिवकोटि होना चाहिए।

आचार्य शिवार्य विनीत, सहिष्णु और पूर्वाचार्यों के भक्त हैं। शिवार्य पाणित-भोजी (हाथ में आहार ग्रहण करनेवाले) होने के कारण दिगम्बर परम्परानुयायी है। इनके गुरु का नाम सर्वगुप्त है।

अनेक शोध अध्ययन के बाद आचार्य शिवार्य या शिवकोटि का समय आचार्य समन्तभद्र और आचार्य पूज्यपाद के मध्य का माना जाता है। मथुरा अभिलेखों से प्राप्त संकेतों के आधार पर इनका समय ई. सन् की प्रथम शताब्दी माना जा सकता है।

रचना-परिचय : आचार्य द्वारा रचित एक ही ग्रन्थ प्राप्त होता है।

1. भगवती-आराधना : 'भगवती आराधना' या 'मूलाराधना' ग्रन्थ में सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र और सम्यक्तप—इन चार आराधनाओं का निरूपण किया है। इस ग्रन्थ में 2166 गाथाएँ और 40 अधिकार हैं। यह ग्रन्थ इतना लोकप्रिय रहा है कि इस पर सातवीं शताब्दी से ही टीकाएँ और विवृत्तियाँ लिखी जाती रही हैं। इस ग्रन्थ में अनेक कथा-प्रसंगों का वर्णन है, जिनको संकलित करके अनेक कथाकोश रचे गये हैं। रत्नत्रय और तप के साथ आराधना का वर्णन करनेवाला यह महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसमें सात प्रकार के मरण का विशेष वर्णन किया गया है।